International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(3): 29-32

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(3): 29-32
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-02-2023
Accepted: 29-03-2023

प्रिया सिंह
संस्कृत, डॉ. राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, सम्बद्ध–वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
प्रिया सिंह
संस्कृत, डॉ. राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, सम्बद्ध–वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

नायिका यक्षिणी का सौन्दर्य निरुपण

प्रिया सिंह

सारांश
कालिदास द्वारा रचित 'मेघदूत' की नायिका यक्षिणी अपूर्व सुन्दरी एवं पवित्रता नारी है, उसके अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन यक्ष मेघ से कहता है कि यक्षिणी न केवल शारीरिक सौन्दर्य के गुणों से परिपूर्ण है बल्कि आन्तरिक सौन्दर्य के गुण भी फूट–फूट कर भरे हुए हें। यक्षिणी के सौन्दर्य के आगे कालिदास की सभी नायिकाओं का सौन्दर्य फीका पड़ जाता है। नायिका में लज्जा, पवित्रता, स्नेहशीलता, संरचलता, दयालुता आदि गुण होने चाहिए और यक्षिणी में ये सारे गुण सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। यक्षिणी का शरीर पतला होठ लाल, दान्तों की पक्तियों नुकीली एवं तेज हिरनी के सदृश सुन्दर हैं।

कूटशब्दः नायिका यक्षिणी, पवित्रता, स्नेहशीलता, संरचलता

प्रस्तावना
संस्कृत साहित् में नायिका प्राणवाहिनी धारा है जो जीवन में मर्मरपर्शी मधुर रस से भरा रहता है। वास्तव में स्त्री सुखों की मूल लिलोक का आधार त्रिलोक आधार होने से उसे लेलोक्य रुपा भी कहा जाता है आचार्य भरत मुनि के अनुसार नायिका सुखों का मूल एवं कामभाव की आलम्बन होती है। लेकिन भरमुनि ने नायिक के रुप सौन्दर्य के साथ–साथ नायिका के शील, पवित्रता, अवस्था और जीवन की प्रकृति को भी सौन्दर्य के रुप में महत्वपूर्ण माना है। स्त्री की सुन्दरता उसके आन्तरिक एवं वाह्य दोनों रुपों में होनी चाहिए।
नायिक के सौन्दर्य में सुकुमारता लज्जा, पवित्रता, स्नेह, शीलता, सरलता, दयालुता, आदि गुणों का होना जरुरी होना है। नायिका में केवल शारीरिक सौन्दर्य ही नही अपितु मांसिक सौन्दर्य भी महत्वपूर्ण होता है। भरतमुनि ने स्त्री सौन्दर्य के विषय में बताते हुए कहते है कि 'यह अलड.कार केवल शरीर शोभा ही नही अपितु यह प्राणों का मधुर गुंजन भी है।, नारी के शील का परिष्क्रित परिनिष्ठित रुप है"[1] आचार्य भरतमुनि ने नायिका सौन्दर्य के रुप में नायिका के अंग की संरचना, मन, सौष्ठव और उसके आकर्षक रुप विन्यास एव विलक्षण स्वभाव वर्णन करते है। नायिका के उत्तम मध्यम और अधम और कामशास्त्र में पहिमनी, चित्रणी शंखनी और हस्तीनी के भेद से चार प्रकार के बताये गये है। नायिका सौन्दर्य के शरीरिक सौन्दर्य सम्बन्धी 32 लक्षण कामशास्त्र के अनुसार होने पर भी उन्हें 16 श्रृंगार करना आवश्यक माना गया है।
महाकवि कालिदास नायिका के सौन्दर्य से काफी परिचित थे कालिदास के नायिका सौन्दर्य के वर्णन को देखकर ऐसा लगता है। मानों कवि ने नायिका बहुत ही समीप से देखा है। कवि ने अपने काव्यों में केवल नायिका के शारीरिक सौन्दर्य को ही नहीं बल्कि उनके गुणों के सौन्दर्य का वर्णन किया है।
कवि ने अपने काव्य 'कुमार सम्भव में माता पार्वती के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते है कि "विद्या ग्रहण करने की उम्र में पहुँचते ही अपने पहले जन्म के संस्कारों द्वारा उनमें सब ज्ञान इस प्रकार अवतीर्ण होने लगे जैसे शरद ऋतु के आने से गंगा में संस मालाए या रात्रि होते ही हिमालय की दिव्य औषधियों में उनकी स्वाभावि दिव्य ज्योति अवतीर्ण होती है। और वाल्यवस्था को समाप्त कर धीरे–धीरे उम्र के उस भाग में पहुंच गये जो काया रुपी लता का स्वाभाविक श्रृंगार है जो मदिरा न होकर भी मन को मतवाला बना देता है। और पुष्प न होकर भी कामदेव का तीक्ष्ण बाण है। तब उस नवीन यौवन से उनकी देह ऐसा खिल गया जैसे तुलिका से रंग भर देने पर चित्र या सूरज की रोशनी के स्पर्श से कमल का पुष्प खिल उठता है।"[2]
महाकवि कालिदास ने मेघदूत में नायिका यक्षिणी के रुप सौन्दर्य का अत्यन्त रमणीय एंव अनुपम झलक प्रस्तुत किया है। वैसे तो कवि ने अलका की सभी युवतियों के सौन्दर्य से भांलि परिचित लगते है। यक्षिणी के सौन्दर्य को देखकर ऐसा लगता है। मानों वह विधाता की प्रथम रचना हो क्योंकि यक्षिणी कृशागी युवती है, उसकी दन्तपक्ति अति नुकीली है।

उसके अधर बिम्बाफल के समान लाल है। उसके कटाक्ष चकित हरिणी की स्पर्धा करने वाले है। वह स्तनों के भार से झुकी हुई है। स्तनों के भार के कारण उसकी गति भी धीमी पड़ गयी है। उसकी नाभि अत्यन्त गम्भीर है।[5]

यक्ष की पत्नी पतली छरहरी शरीर वाली है उसकी चितवन चकित हरिणी के सदृश सुन्दर और चंचल है। हिरन की अपेक्षा हिरनी अधिक चंचल होती है। उसमें भी वह किसी की आने की आहट पाकर चौंक कर इधर–उधर देखने लगती है। तो उसके नेत्रों की सुन्दरता और अधिक बढ़ जाती है। पुराने समय में नेत्रों खंजन के नेत्र से समानता या सुन्दर बतायी जाता थी लेकिन कवि समाज यह रुढ़िबद्ध हो चुका है। सुन्दरी नायिका की दन्त पक्ति नुकीली होती है। कवि ने नायिका के सौन्दर्य की उपमा मोती, कुन्दकली दान्त की उपमा न देकर शिखरिदशना के सदृश बताया है। यक्षिणी अपने नितम्ब भार की वजह से अलसायी एवं धीमी गति से चलती है क्योंकि यौवन के पदार्पण होने पर वाला की श्रेणी अभिवर्द्धित होती जाती है। स्वस्थ या सुन्दर यौवन में पुष्ट मांसल, पर्तुलाकार होना सौन्दर्य का परिचायक है। कामीजनों के सौन्दर्य दृष्टि में नायिका का यह अंग अतीव आकृष्ट या आकर्षक होता है। इस आंगिक सौन्दर्य के द्वारा उस नायिका को नितम्बिनी भा कहा जाता है। रघुवंश महाकाव्य में कवि कालिदास ने नायिका के भारी नितम्बों और स्तनों के सौन्दर्य का भलि भाँति बताते हुए कहते है कि वे सुन्दरियाँ इनकी वजह से तैर नहीं पाती है।[6]

मेघदूत मे य7 मेघ से कहता है कि मेरी प्रेयसी प्रियंगुलता में उसके छरहरे शरीर, चकित हिरनियों के नयनों में कटाक्ष चन्द्रमा में मुख की क्रान्ति, मोरपंखों में बाल और नदियों की इठलाती लहरों में हलकी चंचल भौहों की समता देखोंगे

मेघदूत की नायिका यक्षिणी के सौन्दर्य को देखने से यह पता चलता है कि मानों कवि प्राकृतिक उपमानों में विखरे हुए सौन्दर्य एकत्र कर यक्षिणी में समावेश कर दिया है। क्योंकि यक्ष श्यामा, हरिणी, चन्द्रमा मोर लहर आदि में अपनी पत्नी यक्षिणी की अंगों से समानता की है।

कालिदास कहते है यक्ष की स्तन भार से आगे की ओर झुकी हुई है। यौवनावस्था में यौवन के भार से कंधे का जरा सा झुक जाना नायिका के सौन्दर्य को अधिक बढ़ा देता है। उसके व्यक्तित्व में गम्भीरता उत्पन्न करता है। माधुर्य अलजता का संचार करता है। एवं उनके सौन्दर्य में शालीनता भर देती है। महाकवि कालिदास सौन्दर्य प्रेमी कवि कहे जाते है। वे हर रुप को सौन्दर्य मयी बना देते चाहे वह प्रकृति सौन्दर्य हो या पुरुष सौन्दर्य या नायिका सौन्दर्य या पशु पक्षी, वन, उपवन, नदिया, पर्वत, आदि का सौन्दर्य हो वे सभी के सौन्दर्य वर्णन मं अग्रणी है। मेघदूत में यक्षणी के सौन्दर्य की तरह वह कुमार सम्भव मो माता, पार्वती के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते है कि "पार्वती का मुख कमल के सदृश एवं चन्द्रमा के सदृश सुन्दर है। पहले शोभायमान चंचल लक्ष्मी रात्रि को जब चन्द्रमा में पहुँचती तो उन्हे कमल का आनन्द नही मिल पाता और जब दिन में कमल में आती तो रात्रि के चन्द्रमा का आनन्द नही प्राप्त हो पाता लेकिन कवि ने चन्द्रमा और कमल दोनों के गुण वाले पार्वती जी के मुख में जब से आवसी है तब से उन्हे दोनों का आनन्द प्राप्त हो रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि लक्ष्मी जी रात्रि में चन्द्रमा में रहती है। तो कमल मुख से वंचित और दिम में कमल में रहती है तो चन्द्रमा मुख से वंचित हो जाता है। लेकिन पार्वती के मुख द्वारा उन्हें कमल और चन्द्रमा दोनों का एक साथ आनन्द प्राप्त हुआ है। कवि ने पार्वती का नख शिठा वर्णन कर दिया था।[7]

महाकवि कालिदास ने अपने काव्य में नायिका के सौन्दर्य का हृदयकारी चित्र प्रस्तुत किया है। कमल के सदृश सुन्दर आँखों का रुप कटाक्ष के द्वारा खिल उठता है। मेघदूत की नायिका के सौन्दर्य को देखकर सहृदय प्रेमी यक्ष उसके चितवन की भंगिमा से आविद्ध हो जाता है। और उसकी कटाक्ष नेत्र तो उसे और अधिक अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। क्योंकि चंचलता तरलता, मादकता, जलज्जता आमत्रण, निषेध, उद्रदीपन आदि के भाव कटाक्ष के द्वारा ही व्यक्त होते है। कालिदास ने चितवन के सौन्दर्य से भलि–भाँति परिचित थे क्योंकि चितवन से यक्षिणी के नेत्रों की शोभा और अधिक बढ़जाती है। वैसे तो कितनी ही नायिकाओं के अनियारे दीरघ दृग होते है लेकिन जिससे नायक नायक वंश में हो जाये वह कुछ और है। मेघदूत में कवि ने भंगिमाओं के सौन्दर्य को सरल, तरल चटुल और बंकिम रुप में वर्णित किया है।

यक्ष अपनी नायिका या पत्नी को नदी की इठलाती हल्की लहरो के सदृश उसके भूविलास को देखाता है।[8] यक्ष अपनी पत्नी को चटुल नेत्र चकित नेत्रों वाली कहकर सम्बोधित करता है। लेकिन यक्ष की प्रेयसी के नयन विरहा वस्था में मधुपान नहीं करने के कारण अपनी चंचलता को भूल गयी है।

महाकवि कालिदास ने यक्षणी के नेत्र सौन्दर्य वर्णन में देश काल, पात्र, के अनुकूल, मधु, मदिरा, का सर्वत्र उल्लेख किया है। क्योंकि नायकों को कामोन्तेजन के लिए मधु से मिश्रित नेत्र–कटाक्ष अनिवार्य है।

यक्षिणी के अंगों के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कवि कहते है कि यक्षिणी को अपने यक्ष के विरह में लगातार रोने से उसी आँखों सूज गयी है। गर्म सांसों की वजह से निचले अधरों का रंग फीगा पड़ गया है इस प्रकार उस प्रेयसी के हथेली पर रखा हुआ मुण श्रृंगार के आभाव में वालों के लटक आने से पुरा नहीं दिखता है। जैसे तुम्हारें द्वारा ढँक जाने पर चन्द्रमा कान्तिहीन हो जाता है। उसी तरह वह भी मलिन ज्ञात होगी।

यक्षिणी का हस्तन्यस्त मुख उसके स्थित आंगिक सौन्दर्य का वर्णन करता है या द्योतक करता है विरह शय्या पर एक करवट लेटी हुई प्राची दिशा को क्षितिज पर चन्द्रमा की केवल एक कोर के समान यक्ष प्रेयसी का रुप सौन्दर्य का अच्छा उदाहरण है।

चपलता के गतिमयता के द्वारा नायिका के अंग सौन्दर्य का वर्णन करना कालिदास का अति मनोरम व्यापार है। नीला कमल पुष्प अपने आप में सुन्दर है। लेकिन जब वह वायु के द्वारा होले होले हिलता–रहता है तो अत्यधिक सुन्दर लगता है। हिरण हरणी के नेत्र जब आश्चर्य चकित होकर इधर–उधर देखने लगती है। तो उसके आँखों की सुन्दरता और अधिक बढ़ जाती है। मेघदूत में कालिदास ने नेत्र सौन्दर्य के चापल्य का बहुविध वर्णन बड़े आकर्षक ढ़ग से किया है। इसमें नायिका के नयन तो विघुर्णिता है ही मधु भी उनके उच्छवास से विकसित है। कालिदास ने अपने काव्य मेघदूत में सौन्दर्य विलास का मादक वर्णन प्रचुरता के साथ किया है। नायक नायिका के या प्रेमी जनों के भोग विलास के उल्लंग का वर्णन करने में कही भी संकोच नहीं किया है। उनके इस काव्य में रुप की सुरा अन्त में शीला की सुधा बना जाती है। मेघदूत काव्य श्रृंगार की वरलाती नदियों से बहाकर हमें प्रशान्त महासागर में पहुँचा देती है। रुप सौन्दर्य का वर्णन करने वाले कवि ने शील सौष्ठव के प्रति आस्था एवं अनुराग दिखाया है।

मेघदूत खण्डकाव्य की नायिका यक्षिणी अपूर्व सौन्दर्य शालिती है। वह नायक यक्ष की पत्नी है। तथा अलकापुरी में वह निवास करती है। कुबेर के शाप से श्रापित होने के कारण उसके पति यक्ष उससे दूर 1 वर्ष की अवधि के रामगिरि आश्रम में निवास करते है। इसलिए यक्षिणी अपने पति के नियमों का कठोरता से पालन करती है। वह अपने पति से अगाध प्रेम करती है। यक्षिणी पुरी तरह से पतिव्रता स्त्री है। व यक्ष के अतिरिक्त और किसी पुरुष के बारे में सोच ही नही सकती पति से वियोग होने पर वह अपने सभी श्रृंगार का परित्याग कर दी है। पतिव्रता स्त्री होने पर भी वह अपने पति को जाने से नहीं रोकती राजा कुबेर के आज्ञा का पालन ना करने के कारण मिले हुए श्राप का खुद भी भागी बनती है। इस काव्य में कालिदास ने यक्षिणी के सौन्दर्य का अदभूत एवं मनोहर रुप प्रस्तुत किये है।

यक्षिणी यक्ष के वियोग में अत्यधिक परेशान है। उसका देह शिथिल हो गया है। मुख पर झुरिर्या पड़ गयी है। तथा बारम्बार उसके देह के शिथिल होने के कारण मूर्च्छा को प्राप्त करती रहती है।

गन्धर्वो की नगरी अलकापुरी सुख समृद्धि तथा ललिता कलाओं से ओतप्रोत है। संगीत कला में यक्षिणी को महारथ हासिल है। फिर वियोग में उसके स्वर अत्यधिक शिथिल हो गये है। यक्षिणी अपने श्रृंगार का परित्याग करके तपस्विनी या योगिनी के सदृश अपना जीवन बिता रही है। साथ ही अपने प्रियतम यक्ष की प्रतीक्षा में लगे रहते हुए अपने राजा अर्थात् स्वामी की आज्ञा का पालन करती है। यक्षिणी नायिका दृढ़ प्रतिज्ञ, पतिव्रता, एवं स्वामी, भक्त युवती है।

महकवि कालिदास ने अपने नाटकों एंव महाकाव्यों में शील सौन्दर्य का भी प्रचुर मात्रा में वर्णन किया है। वह दूसरे या अन्य पात्रों के मुख से या स्वंय से या घटना दृ चक्र के पात्रों चरित को वर्णित करते हैं। मेघदूत काव्य में कालिदास ने यक्ष और मेघ के अतिरिक्त किसी और पात्र को दृष्टिगत नहीं किया है। किसी के चरित का अंकन करना एक दुरुह व्याहार प्रतीत है। इस काव्य में कालिदास ने केवल एक ही घटना को वर्णित किया है। कि यक्ष मेघ से अपनी पत्नी प्रिया को संदेश भेज रहा है।

यक्षिणी के सौन्दर्य का वर्णन कवि ने यक्ष के कथन से ही कहलवाया है। कालिदास ने यक्ष की पत्नी यक्षिणी को कान्ता, अबला और दयिता कहा है। यक्ष ने अपने पत्नी को प्रिया पत्नी एवं वधु में अभिहित किया है। यक्षिणी अनेक विशेषणों से मेघदूत में शोभायमान बनी हुई है। यक्ष ने उसे गेहिनी तत्वी, श्यामा, बाला, सखी, कान्ता, चटुलनयनी, चकितनयनी, द्वितीय जीवित आदि रुप सौन्दर्य के द्वारा वर्णित किया है।

यक्षिणी रुपगर्विता, बाला, एवं श्यामा है। वह सदगुणों से परिपूर्ण है। संगीत विद्या में यक्षिणी निपुण है। इसलिए वह वीणा को गोद में रखकर वह अपने पति यक्ष के पदों को गाती है। यक्षिणी पदगायन में निपुण एवं निलकला में दक्ष लगती है। वह विरह की अवस्था में क्षीण होने पर पति की आकृति का अपने मनोभावों के अनुकूल चित्र बनाती है। विरह विधुशं यक्षिणी अत्यन्त अल्पभाषणी है।

यक्षिणी पजरस्था सारिका को बढाने में कुशल है। वह मेघ के मित्र मयूर को अपने पहने हुए कंगन की आवाज से ताल दे देकर नचाती है। यक्षिणी बालमदांर वृक्ष का पयसिंचन द्वारा अपने पुत्र की भाँति परवर विश करती है। नृत्य, संगीत, चित्र आदि सभी ललित कलाओं में यक्षिणी सिद्धहस्त है। मधुर भावणी एवं प्रकृति प्रेमी भी है। यक्षिणी के कामना करने पर कल्प नामक वृक्ष नायिकाओं के सौन्दर्य के सभी प्रसाधन पूर्ण कर देता है। अलकापुर की सभी सुन्दरियाँ प्रेम भावना से परिपूर्ण है। एवं प्रेम में सदैव लिप्त रहने वाली है। उनका का काम हमेशा गीत गुनगुना ना श्रृंगार करना एवं वीणा बजाना होता है।

यक्षिणी प्रेमवती नायिका है। प्रेमवती नायिकाये अपने प्रेमी के सम्मुख प्रणयजनित मान करने में सहजशील होती है। मान में नायक नायिका क्रीडा सुखा का अनुभव करते है। फ्रायड के अनुसार "समागम सुख के समय प्रेमी अपने वाल्यकाल में लौट आता है। और उसका अचेतन में दबा हुआ चांचल्य एकान्त पाकर सामाजिक कैची से दूर होने के कारण फिर से प्रकट हो जाता है। रहकेलि में बालक्रीड़ा जनित सुख का आनन्द करता है। इस प्रकार नायिक यक्षिणी भी अपने पति यक्ष मानाभिनय के द्वारा सुख पहुचाने वाली यक्ष की प्रिय या दयिता है।

प्रिय वचन बोलने के द्वारा ही याज्ञवल्क्य ऋषि ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को प्रिया कहा है।[1] ङ यक्षिणी अपने पति का सदा सम्मान करती है। वह मुरझाते, उदास, एवं फीका, पड़े हुए यक्ष को मान द्वारा हरा, भरा, कर देती है। यक्षिणी अपने मधुर वाणी द्वारा यक्ष का स्वागत करती है। वह यक्ष की सहचरी है। वह पने पति यक्ष के साथ विनोद भी करती है। एवं मित्रवत व्यवहार भी करती है। उसे सत्परार्मश भी देती है।

यक्षिणी असली गृहणी है। वह सती साध्वी नारी है। साथ ही पतिव्रता भी है यक्षिणी अपने पति के विरह में ऐश्वर्य के सारे भोग विलास को छोड़ देती है। उसकी नेत्रों काजल नहीं है। उसके बालों में लटे पड़ गयी है। वह एक चोटी या वेणी धारण करती है। उसका यौवन शरीर कृशकाय, मलिनवसवा एवं रुक्ष कपोला हो गया है। मधुपान के बिना उसेक नेत्र भू विलास की कला को पूर्णतया भूल चुके है।

यक्षिणी अपने पति के वियोग में भूमि पर सोने का व्रत लेने के कारण उचटी नींद से लेटी रहती है यक्षिणी स्वर्ग की अप्सरा होते हुए भी यक्ष की पत्नी बनते ही कुलवधु बन जाती है। यक्षिणी शील सौन्दर्य अनुकरणीय है। तभी तो वह भी कुबेर के दिये श्राप का पालन करने वाले यक्ष को अलका से दूर रामगिरि जाकर रहने से रोक नहीं पाती है। यह उसके शील दृ स्वभाव के द्वारा ही सम्भव हो पाया है।

मेघदूत काव्य में कालिदास ने यक्षिणी के रुप सौन्दर्य का ऐसा अनूठा रुप दिखाया है कि मेग से यक्ष उसका वर्णन करते न थकता है और न ही मेघ यक्ष की पत्नी के सौन्दर्य को सुनकर उबता है। यक्ष मेघ से कहता है कि उसकी पत्नी का शरीर पतला है। और उसकी ओष्ठ लाल है। उसकी कमर पतली है। और वक्ष पुष्ट है। तथा कोई–अन्य नायिका उसके रुप सौन्दर्य की समानता नहीं कर सकती है।

सम्भवतः पुरे विश्व का कोई भी या समाज ऐसा नहीं होगा जो कि उसके नारी रुप से रुचिकर न हो। कालिदास ने अपने शब्द चातुर्य से यक्षिणी के रुप सौन्दर्य की ऐसी रुप रेखा खिचि दी है जिसमें प्रत्येक सहृदय पाठक अपनी भावना एवं रुचि का रंगभर कर पूर्ण लेते है। कालिदास ने अपने नायिकाओं को प्रकृति प्रेमी एवं पशु पक्षियों से असीम प्रेम करने वाला बनाया है। पार्वती, सीता, शकुन्तला तथा उसकी सखियाँ स्वय ही आश्रम के वृक्षों से प्रेम एवं स्नेह करती है। उनकी सेवा में प्रत्येक क्षण लगी रहती है। मेघदूत की यक्षिणी भी हरिण शार्वेक का पुत्र की भाँति लालन पालन करती है। यह की प्राकृतिक प्रेम एवं निपुर्णता प्रेम तथा पशुओं के प्रति पुसनता व्यवहार आदि के गुण इस नायिका के सौन्दर्य को बढ़ा देता है।

कालिदास ने अपने काव्यों में नायिका के यौवन सौन्दर्य के अतिरिक्त कन्या, पत्नी एवं माता, तीनों रुपों को भी निखारने का प्रयास किया है। उसकी काव्य ग्रन्थों में एक आदर्श कन्या आदर्श पत्नी एवं आदर्श मातृत्वरुप में देखा जा सकता है।

कालिदास की नायिका ये पहले उमडते हुए वात्सल्यपन का विषय बनती है। और उसके बाद मातृत्व का वरदान पाकर अपने आपको धन्य समझती है। यक्षिणी के वियोग में विलाप करते हुए यक्ष उसे उत्तम गृहणी विश्वस्त सचिव प्रिय सखी तथा ललित कलाओं के विभिन्न स्वरुपों का वर्णन करते है।

कालिदास की सभी आदर्श नायिकाओं का सौन्दर्य त्याग एवं तपस्या में पिरोकर या तपाकर उनके चरित्र कंचन के समान निखरा हुआ है। मुख्य नायिकाओं के अतिरिक्त कवि ने जिन विलासवती नायिकाओं की चर्चा की है। कि वे मादक अवश्य है। लेकिन कालिदास ने उनके लिए कोई विशेष गौरवपूर्ण स्थान का वर्णन नहीं किया है।

गौरव की विषय केवल वही नायिकायें है जो तपोवन की संस्कृति एवं संस्कारों में पली बढ़ी है। जिनका सौन्दर्य आन्तरिक सहज गुणों का सौन्दर्य है। महाकवि कालिदास ने नायिका के सौन्दर्य को महिमा मण्डित किया है। लेखक ने इसके माध्यम से सौन्दर्य तत्वों का उल्लेख किया है। नारी के सात अयत्नज रसाश्रय अंलकारों में से शोभा भी एक है। शोभा का अनुप्राजक धर्म यौवन है। यौवन अस्था में अंगों में सौष्ठव, विपुल भाव, विभेद या उभार आता है। इस विभेद या उभार को कालिदास ने जमकर अलंकार लक्षित करके सौन्दर्यन्वित किया है। कालिदास ने कहा है कि प्रेम का देवता बहुत प्रकार से नवयौवन शाली कान्या में निवास करके इस विभेद या उभार को आकर्षक बनाता है। लेख इस विभेद की भी तात्विक मीमांसा करते है उनके अनुसार समष्टि में जो शिव और शक्ति है वही व्यष्टि में पुरुष और स्त्री है। व्यष्टि में यह भेद यौवन काल में अपनी चरम विकासाख्या को प्राप्त होता है।

इस प्रकार युवावस्था में सौन्दर्य के मनोहर, रमणीय एवं सहज रुप निखरता है। भारतीय काव्य शास्त्र में उत्तर श्रृंगार का वर्णन हुआ है। और वह सौन्दर्य रुप सहज रुप यौवन वस्था वाला है। इसकी महिमा मगलसापेक्ष्य होने में है। व मंग निरपेक्ष यौवन कृष रुप मोहमय है।

महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों की नायिका पार्वती, शकुन्तला, यक्षिणी आदि को कठिन तपस्या से तपाकर विशुद्ध प्रेम की व्यन्जना की है। इस प्रकार कालिदास ने सौन्दर्य धर्म से चलित मंगल सापेक्ष्य सौन्दर्य को श्रेष्ठ मानते है।

कालिदास के नायिका सौन्दर्य वर्णन के अन्तर्गत शोभा से शोभाग्य नामक गुण तक एकतान हो गए है। अतः यह सौन्दर्य सहज है। इस सौन्दर्य के सहज रुप को प्रेम सौन्दर्य और यौवन का त्रिकोण श्रेष्ठ सौन्दर्य मे आरोपित कर देता है। क्योंकि प्रेम सौन्दर्य तपस्या से तपकर स्वच्छ एवं निर्मल होता है। एवं रुप सौन्दर्य लौभाग्य से मण्डित है। फिर यौवन विभवित पूर्ण होकर विलास बनता है। तब उदान्त सौन्दर्य की उत्पत्ति होती है।

आदिकवि कालिदास के युग में नायिका सौन्दर्य की स्पष्ट परिकल्पना एवं उसका रुप लावण्य पूर्ण अवतीर्ण हो चुका था लेकिन रुप साधना का मोहक चित्र कालिदास द्वारा ही चित्रित हुआ है। क्योंकि मेघदूत की नायिका यक्षिणी शिखरिदशना, चकितहरिणी, पक्वबिम्बाधरोष्ठी प्रेक्षणा, मन्दगतिका, स्तन भार से विनम्र तन्वी श्यामा एवं ब्रह्मा की आदि रचना मालूम होती है।

यक्षिणी सौन्दर्य की अधिष्ठासी, सर्वासुन्दरी, तिलोतमाये है। शोभा और सौन्दर्य में यक्षिणी का सौन्दर्य अद्वितीय है। कालिदास ने उसके रमणीय कटाक्ष का ललित वर्णन किया है। नायनिका का सौन्दर्य लावण्य मे निहित है। जो कामिश्री के सभी अगों से अलग है।

कालिदास ने मेघदूत में प्रधान नायिका को छोड़कर अन्य नायिकाओं के सौन्दर्य प्रेम का अदभूत वर्णन किया है। इसलिए कालिदास को सौन्दर्य का पुजारी कहा जाता है। इनके सौन्दर्य के वर्णन को देखकर ऐसा लगता है। कि इनकी पत्नी अत्यन्त सुन्दर एंव राजकुल की रहने वाली रही गी सुन्दरता की उपमा में उन्होंने प्रकृति से जड़ी वस्तुओं का उपयोग कर सुन्दरता में चार चाँद लगा दिया है।

मेघदूत में कालिदास ने अप्रत्यक्ष रुप से जनकतवया लिखकर माता सीता को मंगला चरण के रुप में याद किया और आशीर्वाद लिया है। कालिदास ने नायिका यक्षिणी के सौन्दर्य के अतिरिक्त प्रकृति के विविध रुपों के सौन्दर्य भावना सदैव नायिका सौन्दर्य पर आरोप करता उक्त भावना की सकी..... सूचित करता है। मेघदूत में कवि ने निर्विंध्या और सिन्धु आदि नदियों में स्त्री सौन्दर्य की भावना की है। नदी और मेघ को नायक नायिका के रुप में आरोपित किया है। ग्रीष्म काल में नदियाँ सुखती–सुखती पतली हो जाती है। और तपती रहती है। लेकिन जब मेघ छाया बनकर उनको ढकता है। तो वे शीतल हो जाती है। और फिर मेघ बरसकर उनकी क्षीणता को दूर करता है। कालिदास ने सौन्दर्य भावना सर्वात्र चिपका रखा है।

कालिदास ने प्रकृति के नाना रुपों को स्त्री सौन्दर्य में परिणत कर दिया है। ऊबा सुन्दरी के कपोलों की ललाई, रजनी के रत्नटित केशबाल दीर्घ निःश्वास और अश्रू बिन्दू तो रुढ़ हो ही गये है। किरन, चन्द्रिका, लहरे, छाया, तितली सब अप्सराये बनकर ही सामने आती है।

कालिदास ने मेघदूत में यक्षिणी के विरही रुप का वर्णन किया है। वे कहते है। कि यक्ष के विरह में यक्षिणी मुरझाई हुई कमलिनी के सदृंश हो गयी और वह न तो बोलती है। और न ही संसार के सारे पदार्थों में कोई विशेष रुचि रखती है। बिना आभूषण के एक मैली सी साड़ी पहने अपने यक्ष सहचर से वियुक्त चक्रवाकी की तरह की तरह अकेली मूर्ति बनी बैठी है।

यक्षिणी गोद में वीणा लेकर प्रिय का गीत गुनगुनाती है। तभी अचानक से हृदय में स्मृति की विषय वेदना आँसू बनकर बहने लगती है। और उसी क्षण उसका कण्ठ भी मूक और वीणा भी मूक रह जाती है। यक्षिणी की राते आँखों में बीतती है। और यक्षिणी पति मिलन के सुख स्वप्नों से वञ्चित ही रहती है। यदि उसे अपने प्रियतम से पुर्नमिलन की आशान होती तो उसका कोमल हृदय टूट गया होता। यक्षिणी वास्तव में भारत की एक आदर्श नारी के रुप में प्रतिष्ठित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नाट्यशास्त्र – 22/4
2. कुमार सम्भवम् – 1/30, 31, 32/
3. मेघदूतम् – 2/19
4. रघुवशमहाकात्यम् – 16/60
5. कुमार सम्भवम् – 1/43
6. मेघदूतम् – 2/21
7. मेघदूतम् उत्तरमेघ – 23
8. मेघदूतम् – 2/20